दृष्टि The Vision

निबन्ध (ESSAY)

DTVF/17–ESY-**E2**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ratan Deep Gupta

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	7	8	5	8	4

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): Hindi

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ratan Deep Gupta

YP-26

103

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू० सी० ए०) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट किए गए शब्द-संख्या के अनुसार होना चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड A और B में प्रत्येक से एक-एक चुनकर, दो निबंध लिखिये जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों में हो: 125×2 = 250

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Sections A and B, in about 1000–1200 words each: 125×2 = 250

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड–A / SECTION –A

1. योग में बीमारी ही नहीं बल्कि अर्थव्यवस्था को सुधारने की भी क्षमता है।
   Yoga has potentional not only to heal diseases but economy also.

2. अन्याय की कहीं भी मौजूदगी सर्वत्र न्याय के लिये खतरा है।
   Injustice anywhere is threat to justice everywhere.

3. निषेध की राजनीति: कम व्यावहारिक, अधिक आदर्शवादी।
   Politics of ban: More ideological less practical.

4. महिलाओं की भागीदारी से बढ़ता हुआ आर्थिक विकास।
   Increasing economic growth through women's participation.

"मैं किसी समाज द्वारा किये गये विकास को उसकी महिलाओं के विकास के रूप में आंकता हूँ।"

डा. अम्बेडकर

भारत आज विश्व की सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत की विकास दर आज बड़ी से बड़ी विश्व शक्तियों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शक्तियों का ध्यान अपनी ओर खींचे हुए है। इस विकास की गाथा में देश की आधी आबादी अर्थात महिलाओं की भूमिका भी उत्तरोत्तर बढ़ रही है। अनेक सामाजिक, आर्थिक विसंगतियों के बावजूद आज हर मोर्चे पर महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी दिखाई देती है।

लेकिन यह आत्मविश्वास उन्हें सदियों के संघर्ष के बाद हासिल हुआ है। प्राचीन काल में अपाला एवं घोषा जैसी विदुषियों ने अपनी कीर्तिपताका लहराई। भारतीय समाज में उन्हें सम्मान और बराबरी का दर्जा दिया। परन्तु मध्यकाल का भारत अपनी संकुचित एवं संकीर्ण दृष्टि का शिकार हो गया। महिलाओं को घर की चारदीवारी में कैद होना पड़ा और इसी के साथ कैद हो गई उनकी योग्यताएँ, आकांक्षाएँ और अभिलाषाएँ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हर रात के बाद सुबह होती है। महिलाओं की मुक्ति का प्रश्न भी स्वतन्त्रता एवं भारत की मुक्ति के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ गया। शुरू हुई महिला सशक्तीकरण की यात्रा जो आज तक अनवरत जारी है।

आज की नारी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी प्रश्नों पर पुरूषों के समकक्ष प्रयास करती हुई प्रतीत होती है। आज राष्ट्र के निर्माण में वह अपनी भूमिका से न केवल परिचित है बल्कि उसकी गंभीर जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए तत्पर भी।

इंद्रा नूयी, नैना लाल किदवई, किरन मजूमदार शॉ जैसी महिलाएँ महिलाओं की आर्थिक एवं प्रबन्धकीय योग्यताओं का लोहा मनवा चुकी हैं। महिलाएँ निरन्तर उच्च पदों पर आसीन हो रही हैं और इन सबके साथ वे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सबसे पुराने बजट अर्थात घर के अर्थशास्त्र को संभालने की भूमिका का भी कुशलता पूर्वक सदियों से प्रबन्धन करती आ रही है।

इसके साथ ही वे अपनी शैक्षिक योग्यता में निरन्तर सुधार कर रही हैं, जनसंख्या गणना के आंकड़े इसकी पुष्टि करते हैं। इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्र जहाँ महिलाओं की उपस्थिति कम दिखाई देती रही है, में भी उनका निरन्तर रुझान बढ़ा है।

सामाजिक गतिविधियों में भी वे पहले अधिक जागरूक हुई हैं। वे अपने अधिकारों को समझ रही हैं और उनका उपयोग भी कर रही हैं। फिर चाहे हाजी अली दरगाह में, शनि सिंगापुर मंदिर में प्रवेश का मुद्दा हो या फिर तीन तलाक जैसे मुद्दे। सरकार भी इनकी इसी भूमिका को स्वीकार करते हुए जल एवं वायु सेना में "युद्धक भूमिका" में महिलाओं की नियुक्ति को स्वीकार कर चुकी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार यदि बात राजनीतिक क्षेत्र की करे तो यहाँ भी पंचायती स्तरों पर महिला प्रधानों ने गंभीर परिवर्तन के प्रयास किये हैं।

वाक्य संरचना पर ध्यान दें।

फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि देश के आर्थिक विकास में अभी भी महिलाओं को वह भागीदारी एवं सम्मान नहीं हासिल हुआ है जिसकी वे पूर्णरूपेण हकदार हैं। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की हालिया रिपोर्ट यह बताती है कि श्रमबल भागीदारी (लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन) में महिलाओं की भागीदारी 25% से भी कम हो गई है।

'बात केवल श्रमबल भागीदारी की ही नहीं है महिलाओं को अनेक सामाजिक, आर्थिक,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। आई.एल.ओ. की ही एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं को समान पदों पर कार्यरत पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है तथा अधिकांश शीर्ष पदों पर पुरुषों का कब्जा है। बात यहीं नहीं समाप्त होती है, आंकड़े यह भी बताते हैं कि दुनिया के सबसे कम तनख्वाह वाली नौकरियों में 60% महिलाएँ ही हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि ग्लास सीलिंग जैसी समस्याएँ संस्थागत रूप ले चुकी हैं। तो वहीं कार्यस्थल पर छेड़छाड़ एवं यौन उत्पीड़न की समस्याओं से भी महिलाओं को दो-चार होना पड़ता है। पुरुषवादी सोच से ग्रसित समाज अभी भी स्वेच्छा से महिलाओं को आय

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में बराबरी का दर्जा देने को तैयार नहीं दिखता है। आँकड़े बताते है कि एक महिला औसतन एक पुरूष से अधिक कार्य करती है फिर भी दुनिया भर की सरकारें सकल घरेलू उत्पाद (जी॰डी॰पी॰) के आंकड़ों में घरेलू कार्य के मूल्य को शामिल करने के प्रश्न पर मौन साध जाती है।

इसके साथ ही एक महिला होने की पारिवारिक जिम्मेदारियों का एकतरफा बोझ तो समाज ने पहले ही डाल रखा है तिस पर छेड़छाड़, छींटाकसी, बलात्कार, दहेज हत्या, यौन अपराधों का मनोवैज्ञानिक संत्रास भी महिलाओं की कार्यक्षमता प्रभावित करता है। अनुकूल एवं प्रेरणात्मक वातावरण का अभाव एवं आजन्म भेदभाव उन्हें शारीरिक, मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से इन्फीरियारिटी काम्प्लेक्स से ग्रसित करने का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी कार्य करता है।

महिलाओं द्वारा चुनौतियों के बावजूद देश के सामाजिक, आर्थिक विकास में योगदान को पहचानते हुए ही आज सरकार मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम 2016 लेकर आयी है जिसमें गर्भावस्था के दौरान छुट्टियों को बढ़ाने से लेकर, ~~क्रेच~~ की व्यवस्था समेत अनेक प्रगतिशील प्रावधान है।

इसी प्रकार कार्यालय या कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 के माध्यम एक अनुकूल वातावरण एवं सुरक्षित माहौल प्रदान करने का प्रयास किया गया है। महिलाओं को 24×7 कार्य की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित एक ड्राफ्ट विधेयक भी लाया गया जिससे कि महिलाएँ सुरक्षा के साथ एक लचीले समय-सारिणी में कार्य कर सके।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महिलाओं के स्वास्थ्य पर भी सरकार का ध्यान केन्द्रित है। इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना के माध्यम से गैर संगठित क्षेत्र में भी गर्भावस्था के दौरान 6000/- रुपये की सहायता की जा रही है। सतत विकास लक्ष्यों के तहत लिंग समानता के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक सशक्तीकरण के प्रयासों को बल दिया जा रहा है।

आज एक पक्ष और है जहाँ महिलाओं की भागीदारी की सर्वाधिक आवश्यकता है- वह है स्वयं के विषय में निर्णय लेने की स्वतन्त्रता। संभवतः विभिन्न योजनाओं में महिलाओं को घर के प्रमुख के रूप में पहचान पुरुषवादी सोच को बदलने का ही एक अंग है।

आज आश्चर्य नहीं होता है कि जब आई. एम. एफ. अपने आंकड़ों से स्पष्ट करता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किस प्रकार महिलाओं की श्रमबल में अधिक भागीदारी, जी.डी.पी. में अप्रत्याशित वृद्धि कर सकती है। आज मूल प्रश्न यह है कि जब संविधान ने 67 वर्ष पूर्व ही समानता और स्वतन्त्रता प्रदान कर दी है तो भारतीय समाज इसे कब प्रदान करेगा ?

मनरेगा में महिलाओं की अधिक भागीदारी (50% से अधिक), स्टैंड अप इण्डिया में महिलाओं को प्राथमिकता एवं मुद्रा योजना में महिला उद्यमियों की बढ़-चढ़ भागीदारी को प्रोत्साहन जैसे नीतिगत कदम तो बिल्कुल ठीक है। परन्तु भारतीय समाज को "जिमि स्वतंत्र भई बिगरहि नारी" के दकियानूसी विचार से आगे बढ़ते हुए "कोमल है, कमजोर नही पर, शक्ति का नाम ही नारी है" की अवधारणा को अक्षरशः स्वीकारना होगा।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

21वी सदी के विश्व शक्ति रूपी भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास में महिलाओं के सर्वांगीण विकास को आधार बनाकर ही आर्थिक महाशक्ति के स्वप्न को साकार किया जा सकता है। भारत को कवि रॉस की यह पंक्तियाँ याद रखनी होगी कि

"वे हाथ जो पालना झुलाते हैं, वे ही वे हाथ हैं जो राष्ट्र को चलाते हैं।"

2 नवंबर

52

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड–B / SECTION –B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. भारत को पहले खाद्य सुरक्षा फिर परमाणु सुरक्षा की आवश्यकता है।
   India needs food security first and nuclear security later.

2. जी.एस.टी.: सामान्यीकृत बाज़ार की ओर एक कदम।
   GST: A step towards common market.

3. भारत में भूजलीय क्षेत्रों का प्रबंधन: थोड़ा किया गया है, अधिक किये जाने की आवश्यकता है।
   Watershed management in India: Little done much needed.

4. ग्रामीण प्रकृति को बचाए रखते हुए गाँव का विकास।
   Developing villages while retaining its rural nature.

"गरीबी निकृष्टतम प्रकार की हिंसा है।"

महात्मा गांधी

भारत की 22% आबादी आज भी गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करती है। संख्या में यह आँकड़ा करीब 27 करोड़ बैठता है। यह वह आबादी है जिसको दो जून की रोटी भी मुश्किल से मयस्सर होती है। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि ये दुर्दशा उस देश की है जो क्रय शक्ति क्षमता (परचेजिंग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पावर पेरिटी) के आधार पर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और वर्तमान में विश्व की सबसे तेजी से विकसित होती हुई अर्थव्यवस्था भी।

शीर्षक को देखते हुए निबन्ध के प्रारम्भ में ही खाद्य सुरक्षा बनाम परमाणु सुरक्षा का उल्लेख करें।

तो क्या इन भूखों को रोटी का अधिकार नहीं है, ये भी उसी देश के नागरिक हैं जिसका संविधान इसे एक कल्याणकारी राज्य (वेलफेयर स्टेट) घोषित करता है। इसी रोटी के अधिकार को बात उठती है कि देश में खाद्य सुरक्षा होनी चाहिए।

खाद्य सुरक्षा का सामान्य अर्थ खाद्यान्नों की समुचित उपलब्धता एवं सम्पूर्ण आबादी के भरण पोषण की स्थिति का द्योतक है। सूक्ष्म अर्थों में जब प्रत्येक नागरिक की खाद्यान्नों की आवश्यकता की पूर्ति हेतु सुलभ उपलब्धता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खाद्यान्नों तक सुलभ पहुँच एवं खाद्यान्नों को खरीदने के आर्थिक भार को सहन को सहन करने की क्षमता की स्थिति हो तो इसे खाद्य सुरक्षा की स्थिति माना जाता है।

इसी खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने की कवायद के रूप में एक ओर सरकार द्वारा जन वितरण प्रणाली के माध्यम से सस्ती दरों पर अनाज उपलब्ध कराये जाते हैं तो वही दूसरी ओर सरकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 भी लेकर आयी है जो रोटी के अधिकार को सुनिश्चित करता है।

गौरतलब है कि रोटी का यह अधिकार न केवल भूख मिटाता है बल्कि भारत के उन 40% से अधिक गर्भवती महिलाओं एवं उनकी माताओं के पोषणयुक्त भोजन को भी सुनिश्चित करता है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो कुपोषण, कम वृद्धि एवं कम भार जैसी समस्याओं से ग्रस्त है।

जाहिर सी बात है कि खाद्य सुरक्षा के पीछे सब्सिडी के रूप में सरकार को भारी राजस्व व्यय करना पड़ता है। इस व्यय में कई प्रकार की विसंगतियाँ भी व्याप्त है जैसे कि सही लाभार्थियों का चुनाव न हो पाना, लीकेज की समस्या, भ्रष्टाचार इत्यादि।

सरकार द्वारा खाद्य सुरक्षा हेतु उठाए गई कदमों का भी संक्षिप्त उल्लेख कर सकते हैं।

कुछ विद्वान इस 'अपव्यय' को सही नहीं मानते हैं। उनके अनुसार देश के संसाधनों को अन्य महत्वपूर्ण स्त्रोतों पर भी समुचित रूप से बांटा जाना चाहिए। विज्ञान, शोध एवं विकास, नाभिकीय सुरक्षा जैसे कुछ मुद्दे वे तत्परता से उठाते हैं।

यदि आँकड़ों पर गौर करें तो व्यय की दृष्टि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से यह तक भी उचित मालूम पड़ता है और भविष्य की चुनौतियों से निपटने की दृष्टि से भविष्योन्मुखी भी।

आज अगर भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, कूटनीतिक चुनौतियों को देखें तो नाभिकीय सुरक्षा एक गंभीर मुद्दा बन कर उभरता है। भारत के पड़ोसियों से बनते-बिगड़ते सम्बन्धों के बीच नाभिकीय सुरक्षा शक्ति संतुलन का कार्य करता है।

पाकिस्तान एवं चीन के साथ तल्ख होते रिश्तों एवं सीमा पर बढ़ते तनाव के मद्देनजर भारत को न्यूनतम नाभिकीय रोकथाम (मिनिमम न्यूक्लियर डिटरेन्स) की बिल्कुल आवश्यकता है। इसके साथ ही यदि एन.एस.जी. के मुद्दे पर तथा संयुक्त राष्ट्र में अजहर मसूद जैसे मुद्दों पर चीन का अड़ियल रवैया देखा जाये

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तो नाभिकीय सुरक्षा की कीमत स्पष्ट हो जाती है।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में, बढ़ती प्रतिस्पर्द्धाओं के बीच, आतंकवाद को हथियार बनाकर परोक्ष युद्ध लड़ने वाले पड़ोसियों के साथ भारत को "वीर भोग्या वसुन्धरा" के ध्येय वाक्य के साथ आगे बढ़ने की शक्ति ही सही प्रतीत होती है।

आज की राजनैतिक एवं कूटनीतिक परिस्थितियाँ "क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो" की उक्ति को चरितार्थ करती हुई प्रतीत होती है। और फिर भारत तो सदैव से फर्स्ट यूज पालिसी का समर्थक रहा है तो यह तो वस्तुत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में शक्ति संतुलन का ही कार्य करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बात केवल मारक या बचाव क्षमता पर ही नहीं सकती है। भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा की दृष्टि से भी न्यूक्लियर सिक्योरिटी की आवश्यकता है। पेरिस जलवायु समझौते के तहत कार्बन उत्सर्जन कम करने की प्रतिबद्धता के साथ ही वैश्विक तापन को कम करने की जिम्मेदारी भी तो इसी प्रक्रिया का एक अंग है।

एक विकासशील देश जो अपनी ऊर्जा जरूरतों का मात्र 2% ही नाभिकीय स्रोतों से प्राप्त करता है उसे अपनी विशाल आबादी को ऊर्जा उपलब्ध करने की दृष्टि से भी नाभिकीय सुरक्षा महत्वपूर्ण है। यह अप्रत्यक्ष रूप से भारत के सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी विकास को भी प्रोत्साहित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तो अब प्रश्न यह उठता है कि क्या भारत को अपने रणनीतिक सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय कद को बढ़ाने पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए? अधिक संसाधनों का उपयोग यहाँ सुनिश्चित होना चाहिए या फिर भूख से बिलखती मानवता की करुण पुकार को सुनना चाहिए।

उत्तर छिपा है संतुलन साधने में। एक विशाल जनसंख्या की बड़ी आबादी को खाद्य सुरक्षा तो निश्चित रूप से पहली आवश्यकता है। कहा भी गया है कि भूखे भजन न होइ गोपाला। जब हमारा पेट ही नहीं भरा है, तन मजबूत नहीं है ऐसे में केवल सामरिक सुरक्षा की बात बेमानी लगती है।

ताकि आज़ादी के 70 साल बाद भी खाद्य सुरक्षा प्राप्त न कर पाने के पीछे परमाणु सुरक्षा में लगाया गया बजट उत्तरदायी नहीं है। यह तो सागर में केवल एक बूँद के समान है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किसानों की बढ़ती आत्महत्याएँ, एवं सामाजिक आर्थिक जनगणना के आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में 30% लोगों के पास जमीन ही न होना हमारे सामाजिक-आर्थिक नीतियों की दिशा तय करने के पर्याप्त आधार प्रदान करता है।

आज हमें नागरिकीय सुरक्षा को ध्यान में रखकर चलना है परन्तु मानवता के मूलभूत सिद्धान्त को सदैव स्मरण रखते हुए खाद्य सुरक्षा को प्राथमिकता देनी है एवं महात्मा गांधी के इस कथन को ध्येय वाक्य बनाना है कि-

"जिस दिन प्रेम की शक्ति, शक्ति के प्रेम पर हावी हो जायेगी, सम्पूर्ण विश्व में शांति व्याप्त हो जायेगी।"

खाद्य असुरक्षा के कारणों का संक्षेप में उल्लेख करें- एक कारण आर्थिक/खाद्यान्न बर्बादी है।

4

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation